ईश्वर मिलन के लिए एक विचार

श्रीमद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय (श्लोक 7) में

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

अर्थात

"जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं साकार रूप में अवतार लेता हूँ!"

नया विचार:

हम गीतामें मोक्ष की चाह रखते है; ऐसा ना करते हुए अगर हम ईश्वरसे प्रार्थना करें, "जब कभी आप अवतार लेकर धरतीपर आना चाहते हो, तब हमें आपके निकटवासी बना लिजिए!"